बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक -02-11-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ =14 चतुर चित्रकार नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र। इतने ही में वहाँ आ गया, यम राजा का मित्र।। उसे देखकर चित्रकार के, तुरंत उड़ गए होश । नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह न गया कुछ जोश ।। फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप । बोला-सुन्दर चित्र बना दूं, बैठ जाइए आप।। उकरू-मुकरू बैठ गया वह, सारे अंग बटोर। बड़े ध्यान से लगा देखने, चित्रकार की ओर।। चित्रकार ने कहा-हो गया, आगे का तैयार। अब मुँह आप उधर तो करिए, जंगल के सरदार।। बैठ गया वह पीठ फिराकर, चित्रकार की ओर।

चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर ।।

बहुत देर तक आँख मूंदकर, पीठ घुमाकर शेर । बैठे-बैठे लगा सोचने, इधर हुई क्यों देर? झील किनारे नाव लगी थी, एक रखा था बाँस। चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भरके साँस ।। जल्दी-जल्दी नाव चलाकर, निकल गया वह दूर। इधर शेर था धोखा खाकर, झुंझलाहट में चूर ।। शेर बहुत खिसियाकर बोला-नाव जरा ले रोक । कलम और कागज तो ले जा, रे कायर डरपोक।। चित्रकार ने कहा तुरंत ही रखिए अपने पास । चित्रकला का आप कीजिए, जंगल में अभ्यास

।। -रामनरेश त्रिपाठी

शब्दार्थ

सुनसान = ऐसा स्थान जहाँ कोई मानव न हो, निर्जन, वीरान

सरदार = राजा

खिसकना = चुपके से चल देना

खिसियाकर- नाराज होकर

कायर = डरपोक

चित्र = तस्वीर

यम = यमराज

हिम्मत= साहस

फिराकर= घुमाकर

मूंदकर = मींचकर, बंद करके

होश उड़ना - घबरा जाना

चित्रकला चित्रकारी